भारतीय विद्यालय डारसेट

हिंदी विभाग

पाठ: बिहारी के दोहे कायपत्रिका को तिथि: ----------

संसाधन व्यक्ति: श्रीमती बीना स्टीफन तिथि:----------

विद्यार्थी का नाम :---------- कक्षा : X ब

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 25-30 वाक्यों म लिखिए।

प्र 1. छाया भी कब छाया ढूँढने लगती है?

उ. जेठ (june) को दोपहरी म जब सूरज बिल्कुल सिर के ऊपर आ जाता है तो छायाएँ सिकुड़कर (curl up) वस्तुओं के नीचे दुबक जाती ह। छाया भी मानो छाया के लिए तरसने(crave) लगती है। इसलिए वह घने जंगलों को अपना घर बनाकर उसी म प्रवेश कर जाती है और दोपहर म बाहर नहीं निकलती।

प्र 2. बिहारी को नायिका यह क्यों कहती है - "कहिहै सबु तेरौ हियौ, मेरे हिय की बात" - स्पष्ट कीजिए।

उ. बिहारी को नायिका को विश्वास है कि प्रेम दोनों ओर से है। जैसा प्रेम उसके मन म है, वैसा ही प्रेम प्रेमी के हृदय म भी है। इसलिए वह प्रेमी से कहती है कि वह अपने हृदय की धड़कनों से जान ले कि नायिका के मन म उसके प्रति इतनी ही चाह है।

प्र.3 सच्चे मन म राम बसते ह- दोहे के संदभानुसार स्पष्ट कीजिए।

उ. बिहारी कहते ह – राम अथात् प्रभु उन लोगों के मन म बसते ह जिनकी भक्ति सच्ची होती है। जपमाला, छापा, तिलक आदि बाहरी दिखावा करनेवालों को कुछ प्राप्त नहीं होता।

प्र.4 गोपियाँ श्रीकृष्ण की बाँसुरी क्यों छिपा लेती है?

उ. गोपियाँ बतरस(pleasure in conversation) की लालच (greed) म कृष्ण की बाँसुरी छिपा लेती ह। वे नटखट कृष्ण से प्रेम-भरी बात करना चाहती ह। इस उद्देश्य से वे जानबूझकर कृष्ण की बाँसुरी छिपा लेती ह, ताकि इसी बहाने वे उनसे बात कर।

प्र.5 बिहारी कवि ने सभी की उपस्थिति म भी कैसे बात की जा सकती है, इसका वणन किस प्रकार किया है? अपने शब्दों म लिखिए।

उ. बिहारी ने बताया है कि सभी की उपस्थिति म भी मन की बात आँखों के इशारे से की जा सकती है। नायक ने सब सदस्यों के बीच म नायिका को आँखों से इशारा किया कि चल, प्रेम कर। नायिका ने इशारे से मना किया। नायक उसके मना करने की अदा पर रीझ गया। नायिका नायक को रीझ देखकर खीज उठी। इसके बाद दोनों के नेत्र मिले। दोनों की आँखों म प्रेम की स्वीकृति का भाव था। स्वीकृति पाकर नायक प्रसन्न हो उठा। नायिका की आँखों म लज्जा आ गई।

भाव स्पष्ट कीजिए -

प्र. 1 मनौ नीलमनि - सैल पर आतपु पर्‌यौ प्रभात।

उ. कृष्ण के नीले शरीर पर पीले वस्त्र ऐसे सज रहे ह मानो नीलमणि पवत पर प्रातःकालीन धूप खिल उठी हो। यह संभावना और कल्पना रंग-रूप और चमक की समानता के कारण बहुत सुंदर बन पड़ी है।

प्र. 2	जगतु तपोबन सौ कियौ दीरघ-दाघ निदाघ।
उ.	ग्रीष्म ऋतु को भीषण गर्मा ने जंगल को मानो तपोवन जैसा पवित्र बना दिया है। अब यहाँ हिंसा नहीं रही। आपसी सौहाद और मित्रता का भाव सबम पनप गया। शेर और हिरण, साँप और मोर जैसे कट्टर शत्रु भी समान रूप से बिना एक-दूसरे पर आक्रमण किए गर्मा सहन कर रहे ह।
प्र.3	जपमाला, छापै, तिलक सरै न एकौ कामु। मन-काँचै नाचै वृथा, साँचै राँचै रामु।।
उ.	बिहारी कहते ह- जप करने को माला हाथ म लेकर जप करने से, सारे शरीर पर चंदन का छाप लगाने से अथवा माथे पर तिलक लगाने से एक भी काम नहीं निकलता। आशय यह है कि यो सब बाहरी दिखावे ह। इनसे प्रभु प्राप्ति नहीं हो सकती। केवल अधूरी भक्ति वाले अपरिपक्व लोग ही इन व्यथ के कमकांडों म लगे रहते ह। जब कि ये व्यथ के नृत्य ह। राम तो सच्ची भक्ति देखकर ही प्रसन्न होता है।